

शिष्यता के अनिवार्य तत्व

आत्मिक नेतृत्व की अनिवार्य बातें
अगुवों की पुस्तिका

क्षमा और मेल-मिलाप

अध्याय 1: क्षमा के आधार

परिचय

यह अध्याय क्षमा और मेल-मिलाप नामक शीर्षक वाले मॉड्यूल शिष्यत्व की अनिवार्य बातों का भाग है। हमारे जीवन में परमेश्वर की क्षमा को स्वीकार करना और दूसरों को क्षमा करना कठिन हो सकता है। दूसरों को क्षमा करना हमारी स्वाभाविक प्रवृत्ति के विरुद्ध है। लेकिन जब हम परमेश्वर को हमारे दिलों और मनो को बदलने की अनुमति देते हैं तो हम परमेश्वर और एक-दूसरे के साथ मेल-मिलाप का अनुभव कर सकते हैं। यह मॉड्यूल क्षमा के धर्मशास्त्रीय आधारों, मेल-मिलाप के लिए जरूरी प्रक्रिया, और एक-दूसरे के साथ मेल-जोल में रहने को बढ़ावा देने के तरीके की खोज करता है। यह क्षमा को भी जाँचता है क्योंकि व्यक्तियों या एक समुदाय के सदस्यों के बीच इसकी जरूरत हो सकती है।

इच्छित श्रोता

इन अध्यायों के इच्छित श्रोता वे मसीही हैं जो अपने विश्वास में परिपक्व हो रहे हैं और परमेश्वर की सेवा करना चाहते हैं। ये अध्याय विशेष रूप से पासबानों, कलीसियाई अगुवों, शिक्षकों या उपदेशकों के साथ-साथ किसी भी ऐसे व्यक्ति के लिए उपयोगी हैं जो परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते में बढ़ना चाहता है।

अगुवों की पुस्तिका एक अगुवे के रूप में आपकी तैयारी में सहायता करने के लिए है। इन अध्याय रूपरेखाओं का प्रयोग www.dehindi.org पर उपलब्ध शिष्यत्व अनिवार्य कार्यक्रम की अन्य सामग्रियों के साथ किया जा सकता है।

बाइबल के हवालों को पवित्र बाइबल, बाइबल सोसाइटी ऑफ इण्डिया (बी.एस.आई.) से लिया गया है। इन हवालों को प्रकाशित करने की अनुमति ली गयी है। इसके सारे अधिकार आरक्षित हैं।

अन्य सभी सामग्री © 2019 ट्रांस वर्ल्ड रेडियो कनाडा है, और इसका उपयोग किसी भी तरह से किया जा सकता है, जब तक आप इसका उपयोग मसीह के लिए दुनिया तक पहुंचने के उद्देश्य से करते हैं और सामग्री के उपयोग के लिए शुल्क नहीं लेते हैं। अधिक लाइसेंस विवरण देखें: www.discipleshipessentials.org/licensing



क्षमा और मेल-मिलाप

अध्याय 1: क्षमा के आधार

उद्देश्य

यह अध्याय बाइबल में सिखाई गई क्षमा को सिखाता है। इसमें परमेश्वर द्वारा हमें क्षमा करना, उसकी आज्ञा कि हम एक-दूसरे को क्षमा करें, और इसके कारण शामिल हैं कि क्षमा की क्या जरूरत है।

अगुवों के लिए टिप्पणी

जब कोई हमें चोट पहुँचाता है तो क्षमा करना असंभव लगता है। जब किसी घटना या टूटे रिश्ते का दर्द दूर नहीं होता है तो ऐसा लगता है कि हमें बार-बार चोट पहुँच रही है। फिर भी यीशु ने क्षमा करने के बारे में बहुत कुछ सिखाया है। यह अध्याय आसान नहीं है और आप ऐसे वास्तविक लोगों को सिखा रहे हैं जिन्होंने अतीत (या शायद वर्तमान) में वास्तव में चोट खाई है। यदि आपके भागीदार कठिन परिस्थितियों से गुजरे हैं और उन्हें वास्तव में अभी अपने शत्रुओं को माफ करना है तो वास्तव में क्षमा करने के लिए उन्हें जो करना है उसे सोचने के लिए उन्हें समय दें। यदि आपने अपने स्वयं के जीवन में क्षमा का कोई कार्य अनुभव किया है तो उसे अपने भागीदारों को बताएँ। यदि आप उनके समुदाय या स्थानीय इतिहास से कक्षा को कोई उदाहरण बता सकते हैं तो क्षमा और मेल-मिलाप के यथार्थ को इस प्रकार बताएँ जिससे उन्हें विश्वास और प्रोत्साहन मिले। प्रार्थना करें कि क्षमा करना सीखने में आपके भागीदारों को परमेश्वर की सहायता मिले!

परिचय

समूह से पूछने के लिए निम्नलिखित में से दो या तीन प्रश्नों को चुनें।

- ❖ आपके लिए 'क्षमा' शब्द का क्या अर्थ है?
- ❖ क्या आपकी क्षमा करने की इच्छा की सीमाएँ हैं? किसी व्यक्ति के किस कार्य को क्षमा करना आपके लिए असंभव हो सकता है?
- ❖ क्षमा और मेल-मिलाप आपस में कैसे जुड़े हैं? क्या एक के लिए हमेशा दूसरे की जरूरत होती है?
- ❖ क्या परमेश्वर ने आपके सारे पापों को माफ कर दिया है? आप कैसे जानते हैं कि परमेश्वर ने आपको माफ कर दिया है?
- ❖ क्या आपको किसी दोस्त या परिवार के सदस्य से क्षमा माँगने की जरूरत पड़ी है? आपने क्या प्रक्रिया अपनाई, और उसका अन्तिम परिणाम क्या निकला?



अध्ययन

समूह को निम्नलिखित बिन्दुओं पर निर्देश दें।

सिखाएँ

- ❖ **क्षमा क्या है?** बाइबल को संक्षेप में अपनी सृष्टि के साथ परमेश्वर के संबंध की कहानी के रूप में बताया जा सकता है। पाप के कारण हमारे और परमेश्वर के बीच इस संबंध में दरार आ गई और वह टूट गया। पाप दूसरे व्यक्ति या परमेश्वर के विरुद्ध जान-बूझकर किए जाने वाले अपराध (गलत कार्य) हैं। वे केवल गलतियाँ या अनजाने में किए गए कार्य नहीं हैं और इसलिए लोगों के पास कोई बहाना नहीं है। पाप और टूटा हुआ संबंध आज संसार की सारी बुराई की जड़ है जिसे परमेश्वर क्षमा के द्वारा फिर से सुधारने की पेशकश करता है। यदि हमें दूसरों को क्षमा करना है तो हमारे लिए यह समझना जरूरी है कि क्षमा क्या है।
 - **क्षमा का अर्थ छोड़ना है:** क्षमा करने की सबसे सरल परिभाषा हमें चोट पहुँचाने के कारण किसी को चोट पहुँचाने के हमारे अधिकार को छोड़ना है। हम बदला लेने के अपने दावे को छोड़ते हैं और फिर उनके विरुद्ध कोई बैर मन में नहीं रखते। हालांकि उनके पाप का फल उन्हें भुगतना पड़ सकता है लेकिन हम हमारे प्रति नैतिक कर्ज से मुक्त करते हुए चोट पहुँचाने वाले पक्ष को मुक्त कर देते हैं।
 - **क्षमा सुधार को शुरू करती है:** जब किसी के साथ हमारा एक अच्छा संबंध होता है जो बाद में किसी अपराध के कारण टूट जाए तो उस संबंध को फिर से बहाल करने के लिए क्षमा की जरूरत पड़ती है। यह किसी टूटी हुई वस्तु की मरम्मत कर उसे नया बनाने के समान है। यह किसी का हमारे साथ फिर से दोस्ती में स्वागत करना है।
 - **क्षमा और मेल-मिलाप एक जैसे नहीं हैं:** आप किसी ऐसे व्यक्ति को क्षमा कर सकते हैं जिसने आप से क्षमा नहीं माँगी है और वह शायद अब आपके जीवन में भी नहीं होगा जबकि एक टूटे रिश्ते को फिर से जोड़ने के लिए दो लोगों का आपस में सहमत होना जरूरी है। क्षमा उस दिशा में पहला कदम है।
 - **क्षमा के लिए एक बदलाव जरूरी है:** जब हम किसी को क्षमा करते हैं तो उसके लिए केवल क्षमा के शब्दों, 'मैं तुम्हें माफ करता हूँ,' कि बजाय हमारे व्यवहार में एक बदलाव की जरूरत पड़ती है। लूका 6:27-28 में यीशु ने हमें सिखाया है कि हमें क्या करना है। यीशु ने चार बातों का वर्णन किया:
 - **प्रेम करो:** इसके अनुसार हमें सहायक कार्यों के द्वारा किसी दूसरे को खुद से पहले रखना है। यह केवल हमारे दिल की एक भावना ही नहीं बल्कि एक चुनाव है जो हमारे व्यवहार को प्रभावित करता है।
 - **भलाई करो:** इसके लिए दया, सेवा और करुणा के कार्यों की जरूरत है। यह एक मुस्कुराहट या किसी भी तरह से सहायता करने के समान आसान हो सकता है।
 - **आशीष दो स्राप नहीं:** हमें ठेस पहुँचाने वाले व्यक्ति के विरुद्ध बुरी बातों की बजाय अच्छी बातें कहने का निर्णय लेना चाहिए। हमें उन्हें स्राप नहीं देना चाहिए बल्कि उनके बारे में दया के साथ बात करनी चाहिए। हमें उनके द्वारा अपने कामों का फल भुगतने की आशा रखने की बजाय उनकी भलाई की कामना करनी चाहिए।



- o **प्रार्थना करो:** हमें प्रार्थना करनी चाहिए कि परमेश्वर उन्हें क्षमा करे और उनके साथ हमारे रिश्ते को फिर से बहाल करे।

पूछें:

मत्ती 5:38-48 को ऊँची आवाज में पढ़ें। अपने भागीदारों के साथ निम्नलिखित सवालों पर चर्चा करें:

हमें हानि पहुँचाने वालों की हानि करने के सांस्कृतिक रूप से स्वीकार्य तरीके कौन-कौन से हैं?

हमें चोट पहुँचाने वालों और हमारे शत्रुओं के संबंध में यीशु अपने चेलों से व्यवहार में क्या बदलाव लाने के लिए कह रहे थे?

क्या हमारे शत्रुओं को हमारी क्षमा की जरूरत है? क्या क्षमा करने के बाद भी वे हमारे शत्रु हैं?

कार्य:

भागीदारों को लगभग चार-चार के समूहों में बाँटें। प्रत्येक झुण्ड को वचनों के निम्नलिखित समूहों में से किसी एक को लेकर यह लिखने के लिए कहें कि परमेश्वर क्षमा के बारे में क्या कहता है। प्रत्येक समूह जो सीखता है उसके सारांश को लिखे।

समूह 1	समूह 2	समूह 3
इफिसियों 4:32 मरकुस 11:25 मत्ती 18:21-22 कुलुस्सियों 3:13	भजन 103:2-4 भजन 103:10-14 सभोपदेशक 7:20 यिर्मयाह 31:34	नीतिवचन 28:13 इफिसियों 2:8 लूका 23:33-34 रोमियों 12:17

सिखाएँ:

- ❖ **परमेश्वर द्वारा हमारी क्षमा:** परमेश्वर चाहता है कि उसकी सृष्टि का उसके साथ संबंध फिर से बहाल हो जाए और पाप के कारण सृष्टिकर्ता और सृष्टि के बीच का टूटा हुआ रिश्ता फिर से जुड़ जाए। यह उसकी क्षमा के द्वारा होता है। जब हम परमेश्वर द्वारा हमें दी गई क्षमा को समझते हैं तो हम दूसरों को क्षमा करने में समर्थ बनते हैं।
 - **परमेश्वर की क्षमा की कीमत बहुत बड़ी है:** लहू बहाए बिना पापों की कोई क्षमा नहीं है। पुराने नियम के इतिहास के दौरान क्षमा केवल विशेष होमबलियों के द्वारा ही पाई जा सकती थी। फिर हमारे पाप के लिए बलिदान के रूप में अपना जीवन देने के लिए यीशु मसीह इस संसार में आए। क्षमा की कीमत बहुत बड़ी थी। (इब्रानियों 9:22-26)
 - **परमेश्वर की क्षमा की हम सबको जरूरत है:** हम में से एक भी व्यक्ति निष्पाप होने का दावा नहीं कर सकता है। हर एक जीवित व्यक्ति को क्षमा की गहरी जरूरत है, चाहे उन्हें इसकी जानकारी हो या नहीं। (रोमियों 3:23)



- **परमेश्वर की क्षमा हमारे पाप की समस्या को बताती है:** हम चाहे जीवन में किसी भी बात को अपनी सबसे बड़ी समस्या मानें लेकिन हमारी पाप की समस्या सबसे बड़ी है। पाप ने परमेश्वर के साथ हमारे संबंध को तोड़ दिया है और एक-दूसरे के साथ हमारे रिश्ते को बिगाड़ रहा है। केवल परमेश्वर की क्षमा ही हमारे पाप की समस्या को हल कर सकती है। (1 यूहन्ना 1:9)
- **परमेश्वर की क्षमा हमारे अपराध बोध की समस्या को बताती है:** जब हमें हमारे पाप की जानकारी होती है तो हमारे अपराध बोध का बोझ आनन्द के साथ हमारे उद्देश्यों को पूरा करने से हमें रोक सकता है। परमेश्वर की क्षमा शान्ति लाती है, हमें अपराध बोध से मुक्त होकर जीने की अनुमति देती है। (रोमियों 5:1)
- **परमेश्वर की क्षमा स्वतः नहीं मिलती है:** क्षमा अंगीकार और मन-फिराव के द्वारा उद्धार के पल मुफ्त में मिलती है। लेकिन एक मसीही के लिए पाप के कारण परमेश्वर के साथ संगति में रुकावट आती है, हालांकि हमारा उद्धार सुरक्षित है। सतत क्षमा और परमेश्वर के साथ संगति नियमित रूप से हमारे पापों के अंगीकार पर निर्भर है। (1 यूहन्ना 1:9)
- **परमेश्वर की क्षमा अनन्त है:** यह क्षमा अल्पकालीन नहीं है और न ही यह केवल एक बार मिलती है। यह स्वयं परमेश्वर के समान ही अनन्त है। (यूहन्ना 5:24; प्रेरितों 2:38)
- **परमेश्वर की क्षमा हमारे अतीत के लिए है:** जब हम हमारे अतीत के पापों के लिए क्षमा माँगते हैं तो परमेश्वर की क्षमा उन सारे कार्यों पर लागू होती है जिन्हें हमने किया है। (मीका 7:19)
- **परमेश्वर की क्षमा हमारे वर्तमान के लिए है:** जब हम पाप करते हैं तो हम जानते हैं कि हम तुरन्त ही परमेश्वर से क्षमा माँग सकते हैं क्योंकि यीशु मसीह ने दण्ड चुका दिया है। (1 यूहन्ना 2:1-2)
- **परमेश्वर की क्षमा हमारे भविष्य के लिए है:** हमें पाप से बचना चाहिए लेकिन फिर भी भविष्य में ऐसे समय आएँगे जब हमें परमेश्वर के अनुग्रह और क्षमा की जरूरत पड़ेगी। हम यह भरोसा कर सकते हैं कि यदि हम क्षमा माँगते हैं तो परमेश्वर हमें क्षमा करेगा। (इब्रानियों 7:25)
- **परमेश्वर की क्षमा पर भरोसा किया जा सकता है:** हम परमेश्वर की क्षमा पर भरोसा कर सकते हैं क्योंकि हम उसके चरित्र पर भरोसा कर सकते हैं। परमेश्वर कभी बदलता नहीं है इसलिए जब वह हमें क्षमा करता है तो हमारा छुटकारा निश्चित है। यह यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान पर आधारित है और कुछ भी उसे रोक नहीं सकता है! (इब्रानियों 9:11-12)
- ❖ **जैसे हमें क्षमा किया गया है वैसे ही दूसरों को क्षमा करना:** परमेश्वर हमें दूसरों को क्षमा न करने की अनुमति नहीं देता है। परमेश्वर के साथ हमारा संबंध उसकी क्षमा पर निर्भर है और चूँकि हमारा एक ऐसा कर्ज माफ किया गया है जिसे हम कभी चुका नहीं सकते थे, इसलिए जब दूसरे हमारे विरुद्ध पाप करते हैं तो हमें उन्हें भी माफ करने के लिए तैयार रहना चाहिए। चाहे अपराध कैसा भी क्यों न हो हमें क्षमा को रोकने की अनुमति नहीं है।
- **क्षमा न करने वाले सेवक का दृष्टान्त:** यीशु ने हमें सिखाया कि हम एक ऐसे दास के समान हैं जिसका बहुत बड़ा कर्ज माफ कर दिया गया था, जिसे वह कभी चुका नहीं सकता था। लेकिन थोड़ी ही देर बाद वह दास अपने एक कर्जदार को माफ नहीं कर सका। यदि हम दूसरों के पापों को माफ नहीं करते हैं तो हम प्रेम, दया और कृतज्ञता नहीं दिखाते हैं। (मत्ती 18:21-35)
 - पतरस ने सोचा कि वह प्रेम और क्षमा के बारे में यीशु की शिक्षा को समझ गया था। रब्बियों की शिक्षा सिखाती थी कि एक व्यक्ति को अपने अपराधी को तीन बार क्षमा



करना चाहिए। इसके साथ-साथ प्रेम और अनुग्रह पर यीशु की शिक्षा को जानने वाले पतरस ने सोचा कि सात बार क्षमा करना उदारता दिखाना होगा। यीशु ने उससे कहा कि सत्तत्तर उसके ज्यादा समान था। वह उसे बताना चाहता था कि क्षमा को गिना भी नहीं जाना चाहिए!

- इस कहानी में दास अपनी क्षमा को हल्के में लेता है। इससे न तो वह नम्र हुआ और न ही कृतज्ञ। इसी प्रकार हमें मसीह द्वारा हमारे पापों के लिए चुकाई गई कीमत को हल्के में नहीं लेना चाहिए।
- यीशु आगे कहते हैं कि हमें हमारे भाई (कोई भी जो हमारे विरुद्ध पाप करता है) को क्षमा करना चाहिए नहीं तो हमें हमारे परमेश्वर की क्षमा नहीं मिलेगी।

❖ **क्षमा कठिन क्यों है:** हालांकि हम जानते हैं कि हमें दूसरों को क्षमा करना चाहिए लेकिन उसे करना हमारे लिए बहुत कठिन हो सकता है और उसमें समय लग सकता है। कुछ अपराधों को याद करना बहुत ही पीड़ाजनक होता है। हमें क्षमा की रूकावटों को जानने की जरूरत है जो हमारे रास्ते में आ सकती हैं। कुछ संभावित कठिनाईयाँ इस प्रकार हैं जिनका हमें सामना करना पड़ सकता है।

➤ यह चिन्ता कि गलती करने वाला अपने कामों के फल को भुगतने से बच जाएगा या उसे दण्ड नहीं मिलेगा

- क्षमा करना व्यक्ति को उसके कामों के स्वाभाविक परिणामों से मुक्त करना नहीं है बल्कि इसका अर्थ उसे अपने न्याय से मुक्त कर के परमेश्वर के हाथों में सौंपना है। परमेश्वर हमें सिखाता है कि बदला लेना हमारा काम नहीं है क्योंकि हम सब पापी हैं। परमेश्वर सिद्ध है और हमें न्याय करने और अपनी इच्छानुसार परिणाम और दण्ड देने का काम परमेश्वर पर छोड़ देना चाहिए। हमें भरोसा रखना चाहिए कि परमेश्वर आवश्यक दण्ड देने के लिए बुद्धिमान, न्यायी और प्रेमी है।
- रोमियों 12:19; इब्रानियों 10:30; 1 थिस्सलुनीकियों 5:15

➤ यह चिन्ता कि हमें झूठ बोलना और यह दिखावा करना पड़ेगा कि हमें गहरी चोट नहीं पहुँची थी

- क्षमा माँगना और मेल-मिलाप करना जरूरी है क्योंकि हमें चोट पहुँची और/या हमारा रिश्ता टूट गया था। जब हम यह चर्चा करते हैं कि हमें कैसे चोट पहुँची और अपराधी मन फिराता है तो हमें क्षमा करना चाहिए। यह दिखावा करना सत्य नहीं है कि हमें कोई चोट नहीं पहुँची या कोई अपराध नहीं किया गया।
- लूका 17:3-4

➤ यह चिन्ता कि क्षमा करना लगातार पाप करने की अनुमति देना है

- जब हम किसी को उसके अपराध से मुक्त करते हैं या उसके काम के कारण हमारे बदला लेने के अधिकार को छोड़ते हैं तो हमें पाप की गंभीरता या उसके प्रभाव का खण्डन करने से सावधान रहना चाहिए। क्षमा का मतलब यह कहना नहीं है कि जो हुआ वह स्वीकार्य है बल्कि यह हमारे अन्दर उत्पन्न होने वाले गुस्से के चक्र को रोकने का निर्णय लेना है। क्षमा करने के लिए हिम्मत और चरित्र की जरूरत पड़ती है और क्षमा



पाप की अनुमति देने की बजाय भलाई का साथ देती है। हमें दूसरों के पापी व्यवहार की पहचान करनी चाहिए, सामना करना चाहिए और उन्हें जिम्मेदार ठहराना चाहिए।

○ मत्ती 18:15-17

➤ यह चिन्ता कि क्षमा करने से हमें दोबारा चोट पहुँच सकती है:

- यीशु ने सिखाया कि क्षमा ताकतवर है। लेकिन एक ऐसे व्यक्ति को फिर से हमारे जीवन में अनुमति देना कठिन हो सकता है जिसने कभी हमें चोट पहुँचाई हो। स्वयं को उस स्थिति में लाने के लिए अनुग्रह के कार्य की जरूरत है जहाँ हमें फिर से चोट पहुँच सकती है। यदि हम अपराधी को क्षमा कर देते हैं लेकिन वे मन नहीं फिराते हैं तो हमें उनके लिए प्रार्थना करनी चाहिए और परिस्थिति को परमेश्वर के हाथों में सौंपना चाहिए। लेकिन जब कोई हम से क्षमा माँगता है तो हमें उसे क्षमा करना चाहिए।

○ मत्ती 5:38-42

❖ **हम क्षमा क्यों करते हैं?** परमेश्वर नहीं चाहता कि हम अपनी भावनाओं के गुलाम बन जाएँ। जब हम अपने बैर, नफरत और दुश्मनी को छोड़ते हैं तो हम दूसरों से प्रेम करने और परमेश्वर के रिश्ते में उनकी सहायता करने के लिए मुक्त हो जाते हैं। हम हमारे जीवन में आगे बढ़ सकते हैं और आजादी में जी सकते हैं। क्षमा टूटे हुए रिश्तों को जोड़ती है और भावनात्मक बन्धन में पड़े हुए लोगों को आजाद करती है।

- **क्योंकि हमें इससे भी बड़े अपराधों के लिए परमेश्वर से क्षमा मिली है:** परमेश्वर अनन्त रूप से भला है और हमारा पाप अनन्त रूप से बुरा। भले कार्यों की कोई भी मात्रा परमेश्वर के विरुद्ध किए गए हमारे विद्रोह को निरस्त नहीं कर सकती है। हमारे विरुद्ध किया गया कोई भी पाप उतना बड़ा नहीं है जिसके लिए हमें परमेश्वर ने क्षमा किया है। इसलिए हमें क्षमा करना चाहिए।
- **क्योंकि हम परमेश्वर की आज्ञा मानना चाहते हैं और परमेश्वर ने इसकी आज्ञा दी है:** हमारी इच्छा दूसरों को क्षमा करने सहित सारी बातों में परमेश्वर का आदर करना और उसकी आज्ञा मानना होनी चाहिए। यह कठिन लग सकता है लेकिन हमारी ओर से यह आज्ञापालन का एक जरूरी कार्य है।
- **क्योंकि यह हमें प्रताड़ना, बैर और क्रोध की भावनाओं से मुक्त करती है:** परमेश्वर यह नहीं चाहता है कि हम अपनी भावनाओं के गुलाम बन जाएँ। जब हम बैर, नफरत और दुश्मनी को छोड़ते हैं तो हम दूसरों से प्रेम करने और परमेश्वर के साथ संबंध में उनकी सहायता करने के लिए मुक्त हो जाते हैं। हम अपने जीवन में आगे बढ़ सकते हैं और आजादी में जी सकते हैं। क्षमा टूटे रिश्तों को जोड़ती है और भावनात्मक बन्धनों में पड़े हुए लोगों को आजादी करती है।



विचार-विमर्श:

- ❖ बहुत से ऐसे मुद्दे हैं जो किसी दूसरे व्यक्ति को क्षमा करना कठिन बना सकते हैं। आप किसी ऐसे व्यक्ति से क्या कहेंगे जो आप से यह पूछता है कि वह किसी ऐसे व्यक्ति को कैसे क्षमा करे जो:
 - मर गया है?
 - आपको फिर से चोट पहुँचा सकता है?
 - आपके भरोसे को तोड़ चुका है?
 - जो आप से बात नहीं करना चाहता?
 - अपने व्यवहार से बिल्कुल भी खेदित नहीं है?
- ❖ जब हमें चोट पहुँचती है या हमारे साथ गलत व्यवहार होता है तो हमारा स्वाभाविक जवाब अपना बचाव करना होता है। कई बार हम दूसरों के अतीत के पापों का हथियार के रूप में प्रयोग करते हैं – चोट पहुँचाने या अपने आप को नए रिश्तों से दूर कर भविष्य में स्वयं को चोट से बचाने के लिए बार-बार उन्हें बीच में ले आते हैं। ये दोनों व्यवहार हानिकारक हो सकते हैं। एक साथ मिलकर भजन 91 पढ़ें। बताए गए खतरों और परमेश्वर द्वारा हमारा रक्षक बनने के वायदे के तरीकों की एक सूची बनाइए।
- ❖ जब हम पाप के कारण हमारी दोस्ती को तोड़ने के लिए किसी को क्षमा करते हैं तो कई बार कुछ और क्या टूटता है? क्या ये सारी बातें हमेशा क्षमा के द्वारा बहाल हो जाती हैं या कई बार कुछ और कदमों की जरूरत पड़ती है? क्या ये कदम असंभव होंगे?
- ❖ इस समय एक ऐसे व्यक्ति के बारे में सोचें जिसे आपको क्षमा करने की जरूरत है। आपने उनके विरुद्ध किन पापों को पकड़ रखा है और उन्हें इससे आजाद करने के लिए आपको क्या करना होगा?

प्रार्थना

प्रार्थना के साथ अध्याय को समाप्त करें। प्रार्थना करें कि आपके भागीदार अपने स्वयं के जीवनो में परमेश्वर की क्षमा को समझें और उसे स्वीकार करें। प्रार्थना करें कि इसके द्वारा वे अपने मन में झाँककर यह देखें कि उन्हें किसे क्षमा करने की जरूरत है। प्रार्थना करें कि परमेश्वर उन्हें दूसरों को क्षमा करने के लिए कायल करे, सिखाए और आजाद करे।